फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 18)

तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे नम्बर 8 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा"** दा'वते इस्लामी की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"ह़ुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت،اِستِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 ´ E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा "**फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा**" इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ "**फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा**" के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है । इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा ।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है ।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
29 र-मज़ानुल मुबारक 1437 सि.हि.\ 05 जूलाई 2016 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (28 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर 100 बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दाढ़ी की तौहीन कुफ़्र है

सुवाल : ज़ैद ने मुसल्मान की दाढ़ी की तौहीन कर दी उस को समझाया गया कि येह सुन्नत है और सुन्नत की तौहीन कुफ़्र है आप तौबा कर लें मगर वोह न माना। फिर कुछ अ़र्से के बा'द उसे

1 ...... حلیۃ الاولیاء، ابراھیم بن ادھم، ۸/ ۴۸، الرقم: ۱۱۳۴۱

अच्छी सोह़बत मिल गई। उस ने तौबा तो नहीं की मगर दाढ़ी बढ़ा ली और नमाज़ी भी बन गया, तो क्या उस का दाढ़ी की तौहीन करने वाला गुनाह मुआ़फ़ हो चुका ?

जवाब : दाढ़ी की तौहीन कुफ़्र है और जो मुसल्मान مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुफ़्र बक कर मुरतद हो गया तो उस के पिछले तमाम नेक आ'माल म-सलन नमाज़, रोज़ा और ह़ज वग़ैरा ज़ाएअ़ हो गए और आयिन्दा भी कोई नेक अ़मल मक़्बूल नहीं जब तक सच्ची तौबा न कर ले लिहाज़ा उसे चाहिये कि वोह तौबा कर के तजदीदे ईमान, तजदीदे निकाह़ और तजदीदे बैअ़त करे। इसी त़रह़ के एक सुवाल के जवाब में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : येह (दाढ़ी) सुनन से है और इस की सुन्नियत क़त़्इस्सुबूत, ऐसी सुन्नत की तौहीन व तह़क़ीर और इस के इत्तिबाअ़ पर इस्तिह्ज़ा (हंसी मज़ाक़) बिल इज्माअ़ कुफ़्र। औ़रत उस के निकाह़ से निकल जाएगी और बा'द इस के जो बच्चे होंगे औलादे ह़राम होंगे, अहले इस्लाम को उस से मुआ़-म-लए कुफ़्फ़ार बरत्ना लाज़िम, बा'दे मर्ग उस के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ें और मक़ाबिरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान) में दफ़्न न करें बल्कि जहां तक मुम्किन हो उस जनाज़ए नापाक की तज़्लील करें कि उस ने ऐसे इ़ज़्ज़त वाले पैग़म्बर अफ़्ज़लुल मुर-सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को ज़लील समझा। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰه।[1]

1..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 574

तौबा व तजदीदे ईमान का आसान त़रीक़ा

सुवाल : तौबा व तजदीदे ईमान का आसान त़रीक़ा भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : जिस कुफ़्र से तौबा मक़्सूद है वोह उसी वक़्त मक़्बूल होगी जब कि वोह उस कुफ़्र को कुफ़्र तस्लीम करता हो और दिल में उस कुफ़्र से नफ़रत व बेज़ारी भी हो नीज़ जो कुफ़्र सरज़द हुवा तौबा में उस का तज़्किरा भी करे म-सलन जिस ने दाढ़ी की तौहीन की हो वोह इस त़रह़ कहे : "**या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो दाढ़ी की तौहीन की है इस कुफ़्र से तौबा करता हूं, لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰه या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।**" इस त़रह़ मख़्सूस कुफ़्र से तौबा भी हो गई और तजदीदे ईमान भी।

कई कुफ़्रिय्यात से तौबा का त़रीक़ा

सुवाल : अगर किसी ने مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कई कुफ़्रिय्यात बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो वोह तौबा किस त़रह़ करे ?

जवाब : अगर किसी ने مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कई कुफ़्रिय्यात बके हों और याद न हो कि क्या क्या बका है तो यूं कहे : "**या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से जो जो कुफ़्रिय्यात सादिर हुए हैं मैं उन सब से तौबा करता हूं, फिर कलिमा पढ़ ले।**" अगर कलिमे शरीफ़ का तरजमा मा'लूम है तो ज़बान से तरजमा दोहराने

की ह़ाजत नहीं। अगर येह मा'लूम ही नहीं कि कुफ़्र बका भी है या नहीं तब भी अगर एह़तियात़न तौबा करना चाहे तो इस त़रह़ कहे : **"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर मुझ से कोई कुफ़्र हो गया हो तो मैं उस से तौबा करता हूं, येह कहने के बा'द कलिमा पढ़ ले।"**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेहतर येह है कि रोज़ाना रात सोने से क़ब्ल दो रक्अ़त सलातुत्तौबा अदा कर के साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये और येह म-दनी इन्आ़मात में से एक म-दनी इन्आ़म भी है कि "क्या आज आप ने कम अज़ कम एक बार (बेहतर येह है कि सोने से क़ब्ल) सलातुत्तौबा पढ़ कर दिन भर के बल्कि साबिक़ा होने वाले तमाम गुनाहों से तौबा कर ली ? नीज़ ख़ुदा न ख़्वास्ता गुनाह हो जाने की सूरत में फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा वोह गुनाह न करने का अ़ह्द किया ?"

एक ही कलिमए कुफ़्र से बार बार तौबा

सुवाल : एक बार कलिमए कुफ़्र सादिर हो गया और तौबा भी कर ली अब दोबारा उसी कलिमए कुफ़्र से तौबा कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : एक कलिमए कुफ़्र से बार बार तौबा करने में ह़रज नहीं जब कि इस बात पर यक़ीन हो कि मैं पहले तौबा कर के मुसल्मान हो चुका हूं।

दिल में ना पसन्दीदा और कुफ़्रिय्या बातों का पैदा होना

सुवाल : क्या दिल में ना पसन्दीदा और कुफ़्रिय्या बातों का पैदा होना

भी कुफ़्र है ?

जवाब : दिल में ना पसन्दीदा और कुफ़्रिय्या बातों का पैदा होना कुफ़्र नहीं जब कि ज़बान से उन का अदा करना बुरा जानता हो चुनान्चे **शर्हे फ़िक़्हे अक्बर** में है : जिस शख़्स के दिल पर ऐसी बात गुज़रे कि जिस का कहना कुफ़्र हो और वोह उसे ना पसन्द करते हुए न कहे तो येह ख़ालिस ईमान है।[1] दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 456 पर है : कुफ़्री बात का दिल में ख़याल पैदा हुवा और ज़बान से बोलना बुरा जानता है तो येह कुफ़्र नहीं बल्कि ख़ास ईमान की अ़लामत है कि दिल में ईमान न होता तो उसे बुरा क्यूं जानता।[2]

तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा

सुवाल : तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : तजदीदे निकाह़ का मा'ना है नए मह्र से नया निकाह़ करना। इस के लिये लोगों को इकठ्ठा करना ज़रूरी नहीं। निकाह़ नाम

---

1 ...... منح الروض الازھر، مطلب فی ایراد الالفاظ المکفرة...الخ، ص ۴۵۳

2 ...... कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ की मायानाज़ किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

है ईजाब व क़बूल का। हां ब वक़्ते निकाह़ बत़ौरे गवाह कम अज़् कम दो मुसल्मान मर्द या एक मुसल्मान मर्द और दो मुसल्मान औ़रतों का ह़ाज़िर होना लाज़िमी है। ख़ुत़्बए निकाह़ शर्त़ नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। ख़ुत़्बा याद न हो तो ख़ुत़्बे की निय्यत से اَعُوْذُ بِالله और بِسْمِ الله शरीफ़ के बा'द सूरए फ़ातिह़ा भी पढ़ सकते हैं।

बिलफ़र्ज़् आप पाकिस्तानी 2500 रुपै मह्र के बदले निकाह़ करना चाहते हैं तो आप गवाहों की मौजू-दगी में "ईजाब" कीजिये या'नी औ़रत से कहिये : "मैं ने पाकिस्तानी 2500 रुपै मह्र के बदले आप से निकाह़ किया।" औ़रत कहे : "मैं ने क़बूल किया।" निकाह़ हो गया। यूं भी हो सकता है कि औ़रत ही ख़ुत़्बा या सूरए फ़ातिह़ा पढ़ कर "ईजाब" करे और मर्द कहे : "मैं ने क़बूल किया" निकाह़ हो जाएगा। बा'दे निकाह़ अगर औ़रत चाहे तो मह्र मुआ़फ़ भी कर सकती है, मगर मर्द को चाहिये कि वोह बिला ह़ाजते शर-ई औ़रत से मह्र मुआ़फ़ करने का सुवाल न करे।

एह़तियात़ी तजदीदे निकाह़ का भी येही त़रीक़ा है, अगर ब आसानी गवाह दस्त-याब हों तो बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मियां बीवी तौबा कर के घर की चार दीवारी में कभी कभी एह़तियात़न तजदीदे निकाह़ भी कर लिया करें। मां, बाप, बहन, भाई और औलाद वग़ैरा आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत निकाह़ के गवाह बन सकते हैं। एह़तियात़ी तजदीदे निकाह़ बिल्कुल मुफ़्त है इस के लिये मह्र की भी ज़रूरत नहीं।

मह्र की कम अज़ कम मिक़्दार

सुवाल : मह्र की कम अज़ कम मिक़्दार क्या है ?

जवाब : मह्र की कम अज़ कम मिक़्दार दस दिरहम है। दस दिरहम की चांदी दो तोले साढ़े सात माशा के बराबर होती है जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : कम से कम मह्र दस ही दिरहम है या'नी दो तोले साढ़े सात माशे चांदी या चांदी के सिवा और कोई शै इतनी ही चांदी की क़ीमत की।[1] **बदा-इउ़स्सनाएअ़** में है कि हमारे नज़्दीक मह्र की कम अज़ कम मिक़्दार दस दिरहम या वोह चीज़ जिस की क़ीमत दस दिरहम है।[2] दस दिरहम चांदी की मिक़्दार फ़ी ज़माना तक़्रीबन 30 ग्राम 618 मिली ग्राम बनती है लिहाज़ा मह्र मुक़र्रर करते वक़्त इस बात का ख़याल रखा जाए कि मह्र की रक़म इस से कम न हो।

ईजाब व क़बूल के वक़्त मह्र का ज़िक्र करना ज़रूरी नहीं

सुवाल : क्या ईजाब व क़बूल के वक़्त मह्र का ज़िक्र करना ज़रूरी है ?

जवाब : ईजाब व क़बूल के वक़्त मह्र का ज़िक्र करना शर्त़ नहीं है कि

مدینہ

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 12, स. 162 मुल-त-क़त़न

2...... بدائع الصنائع، کتاب النکاح، بیان أدنی المہر، ۵۶۱/۲

निकाह़ मह्र ज़िक्र किये बिग़ैर भी मुन्अ़क़िद हो जाता है जैसा कि **फ़तावा र-ज़विय्या** में है : जिस ह़ालत में इन्इक़ादे निकाह़ (या'नी निकाह़ हो जाने) का हुक्म हो ज़िक्रे मह्र की कोई ह़ाजत नहीं कि निकाह़ बे ज़िक्र बल्कि ब ज़िक्रे अ़दमे मह्र (या'नी निकाह़ मह्र का ज़िक्र किये बिग़ैर बल्कि अगर किसी ने येह कहा कि मह्र नहीं दूंगा तब) भी सह़ीह़ व मुन्अ़क़िद है (या'नी हो जाएगा) ।(1)

हां ! अगर निकाह़ में मह्र का ज़िक्र हो तो ईजाब पूरा जब होगा कि मह्र भी ज़िक्र किया जाए चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : निकाह़ में मह्र का ज़िक्र हो तो ईजाब पूरा जब होगा कि मह्र भी ज़िक्र कर ले म-सलन येह कहता था कि फुलां औ़रत तेरे निकाह़ में दी ब इवज़ हज़ार रुपै के और मह्र के ज़िक्र से पेश्तर उस ने कहा : मैं ने क़बूल की, निकाह़ न हुवा कि अभी ईजाब पूरा न हुवा था और अगर मह्र का ज़िक्र न होता तो हो जाता ।(2)

क्या निकाह़ का ख़ुत़्बा पढ़ना वाजिब है ?

सुवाल : क्या निकाह़ का ख़ुत़्बा पढ़ना वाजिब है ?

जवाब : निकाह़ का ख़ुत़्बा पढ़ना वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है । हां जब पढ़ा जाए तो ह़ाज़िरीन पर सुनना वाजिब है । ख़ुत़्बए

1...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 11, स. 140

2...... बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा : 7, स. 11

निकाह़ के इ़लावा निकाह़ के मज़ीद चन्द मुस्तह़ब्बात येह भी हैं : "(1) अ़लानिया निकाह़ (2) निकाह़ से पहले ख़ुत़्बा पढ़ना कोई सा ख़ुत़्बा हो और बेहतर वोह है जो ह़दीस में वारिद हो (3) मस्जिद में होना (4) जुमुआ़ के दिन (5) गवाहाने आ़दिल के सामने (6) औ़रत उ़म्र, ह़सब, माल, इ़ज़्ज़त में मर्द से कम हो और (7) चाल चलन और अख़्लाक़ व तक़्वा व जमाल में बेश (या'नी बढ़ कर) हो। (8) जिस से निकाह़ करना हो उसे किसी मो'तबर औ़रत को भेज कर दिखवा ले और आ़दात व अत़्वार व सलीक़ा वग़ैरा की ख़ूब जांच कर ले कि आयिन्दा ख़राबियां न पड़ें। (9) कुंवारी औ़रत से और जिस से औलाद ज़ियादा होने की उम्मीद हो निकाह़ करना बेहतर है। सिन रसीदा, बद ख़ुल्क़ और ज़ानिया से निकाह़ न करना बेहतर। (10) औ़रत को चाहिये कि मर्द दीनदार, ख़ुश ख़ुल्क़, मालदार, सख़ी से निकाह़ करे फ़ासिक़ बदकार से नहीं और येह भी न चाहिये कि कोई अपनी जवान लड़की का बूढ़े से निकाह़ कर दे।"[1]

क्या टेलीफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त है ?

सुवाल : क्या टेलीफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त है ?

जवाब : ऐसा निकाह़ जिस में ईजाब करने वाला किसी और मक़ाम पर हो और क़बूल करने वाला दूसरे मक़ाम पर तो येह निकाह़ नहीं होगा। निकाह़ में ईजाब व क़बूल दोनों का एक मजलिस

1...... बहारे शरीअ़त, जि. 2, ह़िस्सा 7, स. 5 मुल-त-क़तन

में होना ज़रूरी है जैसा कि फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **दुर्रे मुख़्तार** में है : ईजाब तमाम उ़क़ूद में मजलिस से ग़ाइब किसी शख़्स के क़बूल पर मौक़ूफ़ नहीं हो सकता । वोह अ़क़्दे निकाह़ हो या ख़रीदो फ़रोख़्त या इन के इ़लावा कोई और अ़क़्द । ग़ाइब वाली सूरत में ईजाब बात़िल हो जाएगा और बा'द में उसे जाइज़ क़रार देने से भी निकाह़ सह़ीह़ न होगा ।(1)

फ़तावा हिन्दिय्या में है : निकाह़ के लिये दो गवाहों का एक साथ ईजाब व क़बूल के अल्फ़ाज़ सुनना शर्त़ है ।(2) जब कि टेलीफ़ोन पर दोनों गवाह एक साथ नहीं सुन सकते नीज़ टेलीफ़ोन पर बोलने वाला फ़र्द कौन है ? उ़मूमन उस की पहचान भी मुश्किल होती है क्यूं कि टेलीफ़ोन पर एक की आवाज़ दूसरे से मिलती जुलती हो सकती है इस वज्ह से उस के सुनने वाला गवाह नहीं बन सकता जैसा कि **फ़तावा हिन्दिय्या** में है : अगर पर्दे के अन्दर से इक़रार सुना तो रवा नहीं है कि किसी शख़्स पर गवाही दे क्यूं कि उस में ग़ैर का एह़तिमाल है इस लिये कि आवाज़, आवाज़ के मुशाबेह हुवा करती है ।(3)

मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान, वक़ारुल मिल्लत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

---

(1) ...... دُرِّ مختار، کتاب النکاح، ۴/۲۱۲

(2) ...... فتاوىٰ هندية، کتاب النکاح، الباب الاول فی تفسیره...الخ، ۱/۲۶۸

(3) ...... فتاوىٰ هندية، کتاب الشهادة، الباب الثانی فی بیان تحمل الشهادة...الخ، ۳/۴۵۲

फ़रमाते हैं : निकाह़ सह़ीह़ होने की बहुत सी शर्तें हैं : इन में से एक शर्त़ येह भी है कि ईजाब व क़बूल दोनों एक मजलिस में हों और दूसरी शर्त़ येह है कि ईजाब व क़बूल के अल्फ़ाज़ दो आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द या एक मर्द और दो औ़रतें एक साथ सुनें। टेलीफ़ोन पर ज़ाहिर बात है कि मजलिस एक नहीं है लिहाज़ा पहली शर्त़ न पाई जाने की वज्ह से निकाह़ बात़िल है और दूसरी शर्त़ भी नहीं पाई जाती इस लिये कि टेलीफ़ोन से एक आदमी सुनता है, अगर क़ाज़ी ने सुना तो गवाहों ने कुछ न सुना और जब गवाह सुनें तो दोबारा टेलीफ़ोन करने वाला बोलेगा उस ने नए अल्फ़ाज़ सुने वोह जो पहले वाले ने न सुने थे इस त़रह़ दूसरा गवाह भी सुनेगा इस लिये दोनों गवाहों का एक साथ सुनना भी नहीं पाया जाएगा और तीसरी वज्ह बात़िल होने की येह है कि टेलीफ़ोन पर सिर्फ़ आवाज़ सुनी जाती है, कौन शख़्स क़बूल कर रहा है ? येह मा'लूम नहीं होता है और सिर्फ़ आवाज़ से येह मु-तअ़य्यन नहीं किया जा सकता कि येह फ़ुलां शख़्स की आवाज़ है इस लिये कि आवाज़ दूसरे की त़रह़ बनाई जा सकती है। लोग जानवरों की आवाज़ों की इस त़रह़ नक़्ल करते हैं कि अगर सामने न हो तो पहचाना नहीं जा सकता कि येह आवाज़ जानवर की है या इन्सान नक़्ल कर रहा है। बहर ह़ाल टेलीफ़ोन पर निकाह़ बात़िल है।(1) **फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल** में है : टेलीफ़ोन के ज़रीए़ निकाह़ पढ़ना हरगिज़ सह़ीह़ नहीं।(2)

1...... वक़ारुल फ़तावा, जि. 3, स. 52 मुल-त-क़त़न
2...... फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल, जि. 1, स. 560

वु-कला के ज़रीए़ निकाह़ की सूरत

सुवाल : क्या कोई ऐसी सूरत नहीं जिस से टेलीफ़ोन पर निकाह़ करना दुरुस्त हो जाए ?

जवाब : टेलीफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त होने की येह सूरत हो सकती है कि लड़का या लड़की ख़त़ या टेलीफ़ोन के ज़रीए़ किसी शख़्स को अपना वकील बना दे म-सलन लड़का किसी को अपना वकील बनाते हुए येह कहे कि मैं फ़ुलाना बिन्ते फ़ुलां बिन फ़ुलां से इतने ह़क़ महर के बदले में निकाह़ करना चाहता हूं या लड़की कहे कि मैं फ़ुलां बिन फ़ुलां से इतने ह़क़ महर के बदले में निकाह़ करना चाहती हूं। अब वोह वकील लड़के या लड़की की त़रफ़ से दूसरी जगह दो गवाहों के सामने मजलिसे निकाह़ में ईजाब व क़बूल करे तो इस त़रह़ निकाह़ हो जाएगा।

शह्द की मख्खी को नहीं मारना चाहिये

सुवाल : (बैरूने मुल्क के क़ियाम के दौरान ग़ालिबन 4 रबीउ़ल आख़िर 1418 सि.हि. को क़ियाम गाह पर अ़लस्सुब्ह़ अंधेरे में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ का पाउं बे ख़याली में एक शह्द की मख्खी पर पड़ गया। उस ने जलाल में आ कर पाउं के तल्वे पर डंक मार दिया, आप ने बेताब हो कर क़दम उठा लिया शह्द की मख्खी रेंगने लगी। एक इस्लामी भाई उस मख्खी को मारने के लिये दवा का स्प्रेयर (Flying Insect Killer) उठा लाए।

आप ने फ़ौरन उस का हाथ रोक दिया और फ़रमाया : इस बेचारी का क़ुसूर नहीं। क़ुसूर मेरा ही है कि मैं ने बे देखे इस पर पाउं रख दिया अब वोह अपनी जान बचाने के लिये डंक न मारती तो और क्या करती ? इस पर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई :) क्या शह्द की मख्खी को नहीं मारना चाहिये ?

जवाब : शह्द की मख्खी को नहीं मारना चाहिये कि ''नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने च्यूंटी और शह्द की मख्खी को क़त्ल करने से मन्अ़ फ़रमाया है।''[1] ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार जानवरों को क़त्ल करने से मन्अ़ फ़रमाया है। च्यूंटी, शह्द की मख्खी, हुदहुद और इल्टोरा (सब्ज़ रंग का परिन्दा जो छोटे परिन्दों का शिकार करता है)।[2] अलबत्ता ऐसी च्यूंटियां जो बिस्तरों पर चढ़ जाती हैं और आदमी की आंखों या बदन के दूसरे हिस्सों पर काट लेती हैं जिस से आदमी शदीद तक्लीफ़ में मुब्तला हो जाता है तो इन्हें अपने से ज़रर (नुक़्सान) को दूर करने के लिये फ़िनिस वग़ैरा स्प्रे के ज़रीए मारना जाइज़ है। इस की अस्ल वोह अह़ादीसे मुबा-रका हैं जिन में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काटने वाले कुत्ते, चूहे वग़ैरा को क़त्ल करने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है।

مدینہ

1 ...... مُصَنَّف اِبنِ اَبی شَیبة، کتاب الادب، باب فی قتل النمل، ۲۵۹/۶، حدیث:۱

2 ...... اِبنِ ماجہ، کتاب الصید، باب ما ینھی عن قتلہ، ۵۷۸/۳، حدیث: ۳۲۲۴

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिन की मिसाल शह्द की मख्खी की त़रह़ है जो खाती है तो पाकीज़ा चीज़ (फूलों का रस) और पैदा करती है तो पाकीज़ा चीज़ (शह्द) और जिस पाकीज़ा चीज़ पर बैठ जाए तो उसे ख़राब करती है न तोड़ती है।(1)

शह्द की मख्खी के डंक में अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम की याद है और येह तो मक़ामे शुक्र है कि मुझे शह्द की मख्खी ने काटा है अगर इस की जगह कोई बिच्छू होता वोह काट लेता तो मैं क्या करता ?

डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं
क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश)

शह्द की मख्खी के काटे का इ़लाज

सुवाल : शह्द की मख्खी जब काटती है तो शदीद दर्द होता है इस का इ़लाज इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : शह्द की मख्खी और दीगर कीड़े मकोड़ों के काटे के 9 इ़लाज पेशे ख़िदमत हैं :

(1) शह्द की मख्खी जब काट ले तो फ़ौरन अपना या किसी मुसल्मान का थूक लगा लें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्द में कमी आ

---

1 ...... مستدرک حاکم، کتاب الایمان، صفۃ حوضہ ﷺ...الخ، ۱/۲۵۶، حدیث: ۲۶۱ مختصراً

जाएगी बल्कि हर क़िस्म के कीड़े मकोड़े ह़त्ता कि सांप और बिच्छू के काटे पर भी इन्सानी थूक लगाना मुफ़ीद है।

(2) सांप, बिच्छू, शह्द की मख्खी या कोई सा भी ज़हरीला जानवर काट ले, तो पानी में नमक मिला कर डंक की जगह पर लगाइये बल्कि मुम्किन हो तो वोह जगह उस नमक वाले पानी में डुबो दीजिये और मुअ़व्व-ज़तैन या'नी सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र का असर ज़ाइल हो जाएगा।

(3) अगर आप ऐसी जगह रहते हैं जहां शह्द की मख्खियां या बिच्छू होते हैं तो प्याज़ का रस 3 तोला (तक़रीबन 35 ग्राम), अनबुझा चूना 4 ग्राम, नौशादर एक तोला (तक़रीबन 12 ग्राम) बाहम मिला कर निथार (छान) कर अपने पास मह़फ़ूज़ कर लीजिये और ब वक़्ते ज़रूरत बिच्छू और शह्द की मख्खी के काटने के मक़ाम पर लगाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

(4) अगर किसी को सांप डस ले तो प्याज़ का रस और सरसों का तेल हम वज़्न मिला कर मरज़ की शिद्दत के मुत़ाबिक़ आध आध घन्टे या एक एक घन्टे बा'द 4 तोला (तक़रीबन 50 ग्राम) की मिक़्दार में पिलाइये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आराम आ जाएगा।

(5) अगर शह्द की मख्खी काट ले तो उस पर प्याज़ का टुकड़ा बांध लीजिये। गरम पानी या आग से जल जाने की सूरत में भी येही त़रीक़ा इख़्तियार कीजिये।

(6) अगर बिच्छू या शह्द की मख्खी वग़ैरा काट ले तो उस पर प्याज़ काट कर या मसल कर लगाइये और नमक लगा कर प्याज़ खिलाइये।

(7) जब किसी को सांप डस जाए तो उस को प्याज़ कसरत से खिलाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र का असर दूर हो जाएगा।

(8) कन-खजूरा काट ले तो प्याज़ और लह्सन को पीस कर ज़ख़्म पर लेप कर दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ह्र का असर ख़त्म हो जाएगा।

(9) अगर प्याज़ को पानी में घोट (पीस) कर घर में छिड़कें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सांप बिच्छू वग़ैरा भाग जाएंगे।[1]

सांप बच्छू वग़ैरा मूज़ियात से बचने का वज़ीफ़ा

सुवाल : सांप बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों) से बचने का कोई वज़ीफ़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या में है : اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللہِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामिल कलिमात के वासित़े से सारी मख़्लूक़ के शर से

1...... प्याज़ या लह्सन खाने या लगाने की सूरत में जब तक बदबू ख़त्म न हो मस्जिद में जाना मन्अ़ है लिहाज़ा ऐसे इलाज बिग़ैर शदीद ह़ाजत के जमाअ़त के वक़्त के क़रीब न किये जाएं और जब ऐसा इलाज इस्ति'माल करें तो बदबू ख़त्म होने तक मस्जिद न जाएं। मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले "मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये" का मुत़ा-लआ़ कीजिये।
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

पनाह मांगता हूं) रोज़ाना सुब्ह़ो शाम[1] तीन तीन बार पढ़िये सांप बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों) से पनाह ह़ासिल हो ।[2]

ह़दीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे नूरबार में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कल शाम मुझे एक बिच्छू ने डंक मार दिया । फ़रमाया : अगर तुम ने शाम के वक़्त "**اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ**" (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामिल कलिमात के वासित़े से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं) कह लिया होता तो वोह तुझे नुक़्सान न पहुंचाता ।[3] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर क़िस्म के मूज़ियात से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमाए और आख़िरत में भी इन के अ़ज़ाब से बचाए । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेरी लाश से सांप बिच्छू न लिपटें
करम अज़ त़ुफ़ैले रज़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

शह्द का इस्ति'माल सुन्नत है

सुवाल : क्या शह्द का इस्ति'माल सुन्नत है ? नीज़ शह्द कितने रंग

مدینہ

1...... आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमक्ने तक सुब्ह़ है, यूं ही दो पहर ढलने से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक शाम है । (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 9 मुल-त-क़त़न)

2...... श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या, स. 12

3...... مُسْلِم، کتاب الذکر والدعاء...الخ، باب فی التعوذ...الخ، ص ۱۴۵۳، حدیث: ۲۷۰۹

का होता है ?

जवाब : जी हां ! शह्द का इस्ति'माल सुन्नत है। हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसे पसन्द फ़रमाते थे जैसा कि ह़दीसे पाक में है : **كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْجِبُهُ الْحَلْوَآءُ وَالْعَسَلُ** या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मीठी चीज़ और शह्द पसन्द फ़रमाते थे।[1] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शह्द में शिफ़ा रखी है चुनान्चे पारह 14 **सू-रतुन्नह़्ल** की आयत नम्बर 69 में इर्शाद होता है : ﴿فِيهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "जिस (शह्द) में लोगों की तन्दुरुस्ती है।" ह़दीस शरीफ़ में है : **اَلشِّفَآءُ شِفَاءَانِ، قِرَاءَةُ الْقُرْاٰنِ وَشُرْبُ الْعَسَلِ** या'नी शिफ़ा दो चीज़ों में है, क़ुरआने पाक की तिलावत करने और शह्द पीने में।[2]

शह्द के चार रंग होते हैं : अब्यज़ (सफ़ेद), अस्फ़र (ज़र्द), अह़्मर (सुर्ख़) और अस्वद (काला) और येह रंग भी मख्खी की उ़म्र के ए'तिबार से होते हैं। सफ़ेद रंग जवान मख्खी का होगा और ज़र्द उधेड़ उ़म्र वाली का और सुर्ख़ रंग बूढ़ी मख्खी का और काला रंग उस मख्खी का होगा जो इस से ज़ाइद उ़म्र में पहुंच कर मेह़नत करे।[3]

1...... بخاری، کتاب الطب، باب الدواء بالعسل، ۴/۱۷، حدیث: ۵۶۸۲

2...... مستدرک حاکم، کتاب الطب، الشفاء شفاءان...الخ، ۵/۲۸۲، حدیث: ۷۵۱۳

3...... तफ़्सीरे ह़-सनात, पारह 14, अन्नह़्ल, तह़्तल आयह : जि. 3, ह़िस्सा : 69, स. 637 माख़ूज़न

शह्द पीने का त़रीक़ा

सुवाल : शह्द पीने का त़रीक़ा और इस के फ़वाइद भी बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना सुब्ह़ को एक पियाला शह्द का शरबत नोश फ़रमाया करते थे ।[1] पानी में शह्द मिला कर सुब्ह़ ख़ाली पेट पीना बहुत सारे मनाफ़ेअ़ का मज्मूआ़ है । ख़ाली पेट में शह्द फ़ौरन जज़्ब हो कर मे'दे की सफ़ाई करता और जिस्म को बीमारियों से मह़फ़ूज़ रखता है । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : जो कोई हर माह तीन दिन सुब्ह़ के वक़्त शह्द चाट ले वोह उस महीने किसी बड़ी बला में मुब्तला न होगा ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से रिवायत है कि एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे भाई को दस्त की बीमारी है । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उसे शह्द

1..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 251

2..... اِبنِ ماجہ، کتاب الطب، باب العسل، ۴/۹۴، حدیث: ۳۴۵۰

पिलाओ। वोह शख़्स फिर दोबारा ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : दस्त और ज़ियादा हो गए हैं। फ़रमाया : उसे शह्द पिलाओ। वोह शख़्स फिर आ कर अ़र्ज़ करने लगा कि मैं ने अपने भाई को शह्द पिलाया है दस्त और ज़ियादा हो गए हैं। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने सच फ़रमाया है और तेरे भाई का पेट झूटा है, जाओ उसे वोही शह्द पिलाओ, वोह गया शह्द पिलाया तो वोह ठीक हो गया।[1]

तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस आदमी के बारे में इ़ल्म था कि उस के येह दस्त शह्द से ही जाएंगे। इस लिये कि उस मरीज़ के मे'दे में रत़ूबाते लज़िजा ग़लीज़ा (या'नी चिपक्ने वाली ग़लीज़ रत़ूबतें) जमी हुई थीं तो जब क़ाबिज़ दवा पहुंचाई जाती तो उसे फ़ाएदा न होता और वोह फिसल कर दस्तों में आ जाती और दस्त ब दस्तूर रहते तो उस शह्द ने मे'दे की सफ़ाई कर के दस्तों को बन्द कर दिया।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने बुख़ार की ख़बर भेजी, मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दवा और शिफ़ा का मु-तलाशी था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

1 ...... بخاری، کتاب الطب، باب الدواء بالعسل، ۴/۱۷، حدیث: ۵۶۸۴

2 ...... روح المعانی، پ۱۴، النحل، تحت الآیۃ: ۶۹، ۱۴/۵۷۰

ने मेरी त़रफ़ शह्द की कुप्पी (बोतल) भेजी ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हो गए तो लोगों ने अ़र्ज़ की : क्या हम आप का इ़लाज न करें ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : मुझे पानी दो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पानी के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ﴿وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا﴾ (پ۲۶، ق:۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और हम ने आस्मान से ब-र-कत वाला पानी उतारा ।" फिर इर्शाद फ़रमाया : शह्द ले आओ । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शह्द के बारे में फ़रमाया : ﴿فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ﴾ (پ۱۴، النحل:۶۹) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "जिस (शह्द) में लोगों की तन्दुरुस्ती है ।" फिर इर्शाद फ़रमाया : ज़ैतून ले आओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़ैतून के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ﴿شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ﴾ (پ۱۸، النور:۳۵) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "ब-र-कत वाले पेड़ ज़ैतून से ।" जब लोगों ने येह सारी चीज़ें ह़ाज़िर कर दीं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन सब को आपस में मिलाया और फिर उन्हें नोश फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तन्दुरुस्त हो गए ।(2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां येह बात ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि अह़ादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा इ़लाज अपनी मरज़ी से नहीं करने चाहिएं कि हो सकता है वोह ख़ास ख़ास

مدینہ

1 ...... شعب الایمان، باب فی المطاعم والمشارب، أكل اللحم، ۵/۹۸، حدیث: ۵۹۳۱

2 ...... تفسیر قرطبی، پ۱۴، النحل، تحت الآیة: ۶۹، ۵/۹۹، الجزء: ۱۰

मौक़ओ़ं, मौसिमों की मुना-स-बतों और मख़्सूस लोगों के मिज़ाजों और त़बीअ़तों के मुवाफ़िक़ हों जैसा कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अह़ादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी ह़ाज़िक़ त़बीब (या'नी माहिर त़बीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अ़रब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ अपनी राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (त़ब्ई़) मिज़ाज अहले अ़रब के (त़ब्ई़) मिज़ाज से जुदागाना हैं।(1) शह्द ही को ले लीजिये कि इस में शिफ़ा है ताहम बा'ज़ लोगों के वुजूद इसे बरदाश्त नहीं कर पाते जिस की वज्ह से उन्हें नुक़्सान देता है लिहाज़ा वोह शह्द का इस्ति'माल न करें। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 25 सफ़ह़ा 88 पर ''रद्दुल मोह़तार'' के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : जिन मिज़ाजों (या'नी त़बीअ़तों) पर सफ़्रा (वोह ज़र्द पानी जो पित्ते में होता है) ग़ालिब होता है शह्द उन्हें नुक़्सान करता है बल्कि बारहा बीमार कर देता है ! बा-आं कि (या'नी बा वुजूद इस के कि) वोह (या'नी शह्द) ब नस्से क़ुरआनी (दलीले क़ुरआनी से) शिफ़ा है।(2) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان

1...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 217

2...... ردالمحتار، کتاب الاشربۃ، ۱۰/۵۰

के फ़रमान का खुलासा है : त़िब में शह्द को दस्त आवर (या'नी दस्त लाने वाला) माना गया है लिहाज़ा दस्तों (या'नी डाएरिया, लूज़ मोशन) में शह्द इस्ति'माल न किया जाए।(1)

बारिश का पानी ह़ासिल करने का त़रीक़ा

सुवाल : बारिश के बा ब-र-कत पानी को कैसे ह़ासिल किया जाए ?

जवाब : बारिश के पानी को ह़ासिल करने के लिये बारिश शुरूअ़ होते ही पानी जम्अ़ करना शुरूअ़ न किया जाए क्यूं कि फ़ज़ा में गर्दो गुबार, धूआं और कीमियावी अ़नासिर वग़ैरा होते हैं। इब्तिदाई बरसात इन को बहा कर ज़मीन की त़रफ़ लाती है। जब कुछ देर बारिश बरस जाती है तो येह आलू-दगियां ख़त्म हो जाती हैं, अब खुली फ़ज़ा में चोड़े मुंह का बरतन (पतीला, थाल वग़ैरा) रख कर बारिश का पानी जम्अ़ कर लें और साफ़ बोतलों में भर कर मह़फ़ूज़ कर लें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मरीज़ों के लिये कारआमद रहेगा बल्कि सभी को तबर्रुकन पीना चाहिये कि कुरआने पाक में इस को मुबारक पानी क़रार दिया गया है चुनान्चे खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِۙ(۹)
(پ۲۶، ق:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने आस्मान से ब-र-कत वाला पानी उतारा तो इस से बाग़ उगाए और अनाज कि काटा जाता है।

1...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 218 मुलख़्ख़सन

बारिश के पानी का बीमारी में इस्ति'माल का त़रीक़ा

सुवाल : बारिश का पानी बीमारी में किस त़रह़ इस्ति'माल किया जाए ?

जवाब : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए काएनात, मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡكَرِیۡم मरीज़ों को इस त़रह़ हिदायत फ़रमाते थे कि क़ुरआने पाक की कोई सी आयत लिख कर इस को बारिश के पानी से धो कर उस पानी में शह्द मिला कर पी लें اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा पाएंगे ।(1)

याद रखिये ! क़ुरआने पाक की किसी आयत या सूरत को ब निय्यते शिफ़ा बरतन वग़ैरा पर लिख कर उसे इस्ति'माल कर सकते हैं मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि लिखने वाला बा वुज़ू हो और जिस बरतन वग़ैरा पर आयत या सूरत लिखी है उसे बे वुज़ू, जुनुब और ह़ैज़ व निफ़ास वाली औ़रत हरगिज़ न छूए कि येह ह़राम है चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : जिस बरतन या गिलास पर सूरत या आयत लिखी हो उस का छूना भी उन को (या'नी बे वुज़ू और जुनुब और ह़ैज़ व निफ़ास वाली को) ह़राम है और इस का इस्ति'माल सब को मक्रूह मगर जब कि ख़ास ब निय्यते शिफ़ा हो ।(2)

---

1 ...... تفسیر ابن کثیر، پ۱۴، النحل، تحت الآیة:۶۹، ۴/۵۰۱ ملخّصاً

2 ...... बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 2, स. 327

बारिश की फ़ज़ीलत

सुवाल : बारिश की कोई और फ़ज़ीलत भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : बरसती बारिश में दुआ़ क़बूल होती है। दफ़्ने मय्यित के बा'द बारिश होना नेक फ़ाल[1] है खुसूसन जब कि पहले से बारिश के आसार न हों जैसा कि आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت से एक औ़रत के दफ़्न करने के बा'द बारिश होने के बारे में सुवाल किया गया तो इर्शाद फ़रमाया : बारिश रह़मत फ़ाले ह़सन है खुसूसन अगर ख़िलाफ़े आ़दत हो।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मुह़म्मद बिन अ़ली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : रिवायत में है कि जिस ने नंगे पाउं और नंगे सर त़वाफ़ किया उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और जिस ने बारिश में त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।[3]

◈◈◈◈◈

1...... मुह़ा-व-रए अ़रब में "फ़ाल" हर अच्छी बुरी शगून को कहते हैं। ख़याल रहे कि "नेक फ़ाल" लेना सुन्नत है इस में **अल्लाह** तआ़ला से उम्मीद है और "बद फ़ाली" लेना मम्नूअ़ कि इस में रब से ना उम्मीदी है। उम्मीद अच्छी है ना उम्मीदी बुरी, हमेशा रब से उम्मीद रखो। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 255 मुल-त-क़त़न)

2...... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 373

3...... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام...الخ، ۱۹۸/۲

ماخذومراجع

نام کتاب	مطبوعہ	نام کتاب	مطبوعہ
قرآنِ پاک	❄ ❄ ❄ ❄	❄ ❄ ❄ ❄	❄ ❄ ❄ ❄
کنزالایمان	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ	حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
تفسیر القرطبی	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ	بدائع الصنائع	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
تفسیر ابنِ کثیر	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	الدر المختار	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر روح المعانی	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ	رد المحتار	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر الحسنات	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور	الفتاوی الھندیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
سنن ابنِ ماجہ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ	وقار الفتاویٰ	بزم وقار الدین باب المدینہ کراچی
المستدرک	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ	فتاویٰ فیض الرسول	شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور ۱۴۱۱ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ	قوت القلوب	مرکز اہل السنۃ برکات رضا ۱۴۲۳ھ
شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	الوظیفۃ الکریمۃ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور	شجرۂ قادریہ عطاریہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
منح الروض الازھر	دار البشائر الاسلامیہ بیروت ۱۴۱۹ھ	❄ ❄ ❄ ❄	❄ ❄ ❄ ❄

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	क्या टेलीफ़ोन पर निकाह़ दुरुस्त है ?	10
दाढ़ी की तौहीन कुफ़्र है	2	वु-कला के ज़रीए़ निकाह़ की सूरत	13
तौबा व तजदीदे ईमान का आसान त़रीक़ा	4	शह्द की मख्खी को नहीं मारना चाहिये	13
कई कुफ़्रिय्यात से तौबा का त़रीक़ा	4	शह्द की मख्खी के काटे का इ़लाज	15
एक ही कलिमए कुफ़्र से बार बार तौबा	5	सांप बच्छू वग़ैरा मूज़ियात से बचने का वज़ीफ़ा	17
दिल में ना पसन्दीदा और कुफ़्रिय्या बातों का पैदा होना	5	शह्द का इस्ति'माल सुन्नत है	18
		शह्द पीने का त़रीक़ा	20
तजदीदे निकाह़ का आसान त़रीक़ा	6	बारिश का पानी ह़ासिल करने का त़रीक़ा	24
मह्र की कम अज़ कम मिक्दार	8		
ईजाब व क़बूल के वक़्त मह्र का ज़िक्र करना ज़रूरी नहीं	8	बारिश के पानी का बीमारी में इस्ति'माल का त़रीक़ा	25
क्या निकाह़ का खुत़्बा पढ़ना वाजिब है ?	9	बारिश की फ़ज़ीलत	26
		मआख़िज़ो मराजेअ़	27

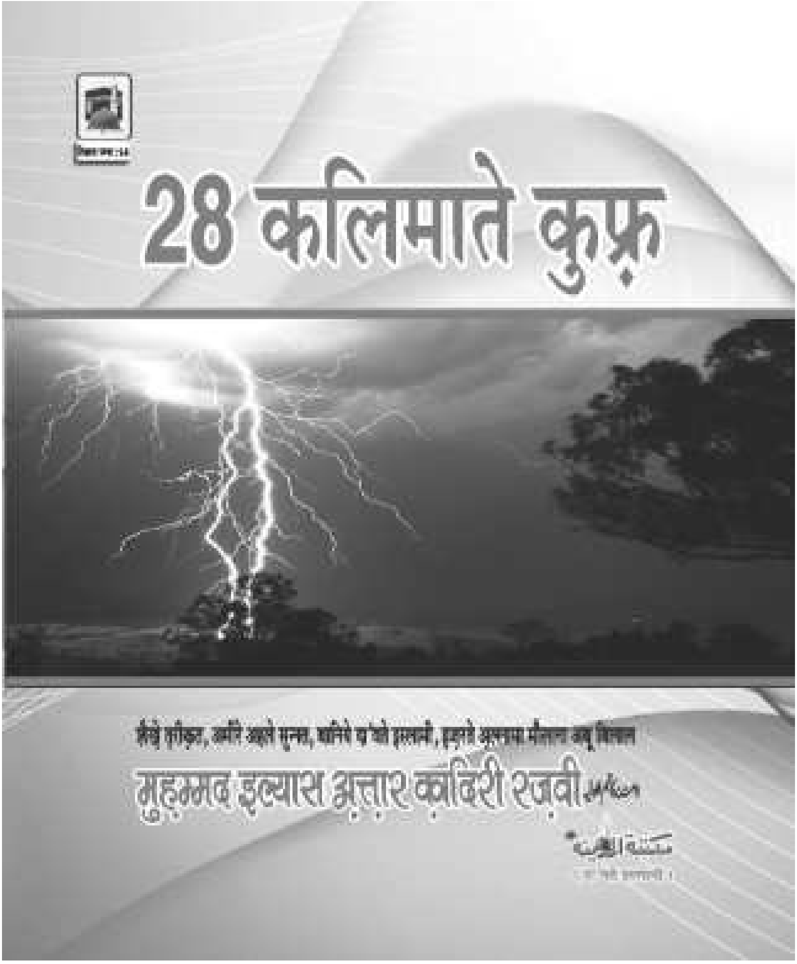
28 कलिमाते कुफ़्र
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۭ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۭ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुम्अ़रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए़ **म-दनी इन्अ़ामात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्अ़ामात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

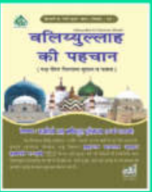

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 9326310099

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net